CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

ओं

श्री महिम्नःस्तोत्रम् ।

(काश्मीरी भाषा में अर्थ तथा हिन्दी में पदार्थ)

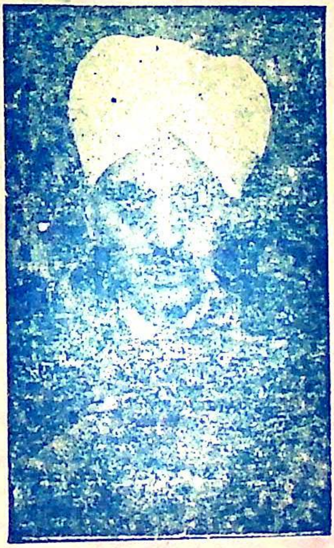

रचतक जीयालाल सराफ

प्रकाशक श्री भवानी मण्डली हारीपर्वत श्रीनगर

[सर्वाधिकार रचतक के आधीन सुरक्षित है

संवत २०१२ जिल्द १०००

-/12/-

मूल्य ~~[illegible]~~

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

प्रार्थना

श्री जीयालाल जी सराफ जिनहों ने कश्मीर देश में सब से प्रथम कश्मीरी भाषा में संस्कृत पुराणों का अर्थ बनाकर भजन कीर्तन पाठ पोजा का आरंभ करके प्रचलित में लाया उन्हीं के प्रधानता में श्री भवानी मण्डली २८०० प्रति शनिवार रात को हारीपर्बत के स्थान पर भजन कीर्तन पोजा पाठ करती रहती है

श्री भवानी मण्डली ने लोगों के उपकार के लिये महिम्नःपार श्लोक तथा कश्मीरी भाषा में अर्थ पदार्थ सहित छपाने का प्रयतन किया ताकि कश्मीरी भाषा में महिम्नःपार हर घर में पोंचे श्रीमान सराफ ने जो मण्डली के मुख्य हैं स्वीकार करके मण्डली को २००० कापी कापी छापने का अधिकार दिया ताकि मण्डली इस की आमदनी धार्मिक कार्यों पर खर्च करें

आशा है तमाम नर नारी हमारी मिहनत से लाभ उठाये और और महिम्नःस्तोत्र के खरीदन में मण्डली की सहायता करे।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

कर्पूर गौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्र हारम् ।
सदा रमन्तं हृदयार विन्दे भवं भवानी सहितं नमामि ॥

काफ़ोर रंग सफ़ेद दयायि हुन्द युस अवतार, संसारुक सार वासुक हटि यस छु हार
हृदय कमलन मञ्ज़ युस फेरवुन भारं भार, भवानी सहित तस दिवस म्योन नमस्कार

त्वत्पादपद्म संदरक मात्र संभोग संगिनम् ।
गले पाद्यकन्या नाथ मामसर्वषम प्रवेशय ॥

ध्यानिन पाद्य कमलन हन्दि मिलापकि, भोगाकि संग सुस कीवल म्य थावतम
शङ्करः लोलूच रज हटि म्य करतम, पर्नानिस द्वारस मञ्ज़ म्य चावतम ॥

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

ॐ नमः शिवाय।

ाधीनामगधं दिव्यं व्याधीनां मूलकृन्तनम

पद्रावाणां दलनं महादेवमुपास्महे ॥१॥

ाधीनाम्	आधियों का	उपद्रवानाम्	उपद्रवों का
गधं	औषधि	दलनं	संहार करने वाला
दिव्यं	अलौकिक	महादेवम्	महादेव (शिवजी) को
ाधीनाम्	व्याधियों का	उपास्महे	पूजा करता हूँ
ल + कृन्तनम्	मूल + काटने वाला		

आधियन हुन्द युस औषधि छु आसवुन

व्याधियन हुन्द युस मूल गालान

कठिनिश उपद्रवन द्रोत युस छु वायान्

तस महादेवस करः बु पूजा।

آدھین ہندیس یُس اوشدھی چھُوہ آسوُن ویادھین ہندیس مُول گالان

کٹھِنین اُپدروَن لیُس دروت یُس چھُو وایان تس مہادیوس کرٕ بہ پوزا

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

अहं पापी पाप क्षपण निपुणाः शंकर भवान्
अहं भीतो भीता भय वितरणे ते व्यसनिता
अहं दीनो दीनोद्धरण विधि सज्जस्त्वमितरत्
न जानेहं वक्तुं कुरु सकल शोचे मयि कृपाम् ।।२।।

अहं	मैं	अहं	मैं
पापी	पापी हूं	दीनो	दुःखी हूं
पाप	पापों को	दीनः	दुःखी के
क्षपण	दूर करने पर	उद्धरण	उद्धार करने के
निपुणाः	विद्वान हैं	विधि	तरीकों पर
शंकर	हे सुख करने वाले	सज्जः	तयार हैं
भवान्	आप	त्वं	आप
अहं	मैं	इतरत्	और
भीतो	डरा हूं	न	नहीं
भीता	डरे हुये को	जानेहं	मैं जानता हूं
ऽभय	अभय	वक्तुं	कहने को
वितरणे	देने पर	कुरु	करो
ते	आप को	सकल	सब लोगों के
व्यसनिता	शौक है	शोचे	दया के काबिल
		मयि	मुझ पर
		कृपाम्	दया

ही शंकर छुस भ पापी आसवुन, चूय पापन छुख नाश करान।
खूचमुत छुस भ भिइ खोफ छुम म्य बासान, चूय अभय दिवान चूय भय कासान।
छुस भ दीन भिइ आरत्येन हुन्द आरूत, आरूत्यन भवसर चूय तारान्।
करदया म्यि बुद्धिहीनस प्यठ च पानै, अमिखोत ज्याद छुस न कँह भ ज़ानान।।

ہی شنکر چھس بہ پاپی آسون چھی پاپن چھکھ ناش کران
خوچمت چھس بہ بیی خوف چھم مہ باسان چھی ابھیہ دیوان چھی بھیہ کاسان
چھس بہ دین بیہ عارتن ہند عارت عارتن بوسری چھی تاران
کردیا می بدھی ہینس پیٹھ چھ پانے [illegible]

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

जनस्त्वद्पादाब्ज श्रवण मनन ध्यान निपुणाः
स्वयं ते विस्तीर्णा न खलु करुणा तेषु करणा।
भवे लीने दीने मयि मनन हीने न करुणा
कथं नाथ ख्यातस्त्वमसि करुणा सागर इति ॥३॥

जनः	भक्त लोग	भवे	संसार में
त्वत्	आप के	लीने	डुबे हुये
पादाब्ज	चरण कमल पर	दीने	अनाथ
श्रवण	सुननी स्तीर्ण	मयि	मुझ पर
मनन	मननःस्तीर्ण	मनन हीने	बे सोच को
ध्यान	निदिध्यासन पर	न	नही करोगे
निपुणाः	ततपर है	करुणा	दया जब
स्वयं	खुद ही	कथं	किस तरह
ते	वह	नाथ	हे स्वामी
विस्तीर्णा	संसार से पार हुये हैं	ख्यातः	मशहूर
न + खलु	नही निश्चय से	त्वं + असि	तुम होगे
करुणा	दया	करुणा	दया का
तेषु	उन पर	सागर	समन्दर
करणा	करने के काबिल	इति	इस तरह

ही शंकर चानि चरण कमलुक युस, करि श्रवण मनन ब्यइ निदि ध्यासन।
तरि पानै सु प्रवैसस्है, हाजत तस, चानिन कटाक्षण हुन्द कति राजन।
संसारस मञ्ज फटिमतिस, म्यि दुखियस, विचार रुस्तीस त म्यि अनाथस।
यलि करख न दया म्यि मूढभाव सोस्तिस, नाव चोन दयासागर वन ब कस।
कति सपदि नवि चोन मशहूर जगतस, शंकर तारान छु भवसागरस॥

ہی شنکرہ چانی چرنہ کملک یُس کری شروَن منن تہ بیہ نِدیہ دھیاسن
تمی پانے سُو بوہ سرہ حاجت تس چانِن کٹاکشن ہُند کتی چھُوہ رٗزن
سنسارس منز پھٹمتس مے دُکھیس وِچارہ رٗستس تہ مے اناتھس
پٔلی کرکھ نہ دیا مے مُوڑھ بھاو سستس ناو چون دیا ساگر ونہ بہ کس
کتی سپدہ ناو چون مشہور جگتس شنکر تارن چھُوہ بوہ ساگرس!

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

ॐ महिम्नः पारंते परमविदुषो यद्य सदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिनामावधि गृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः ॥४॥

महिम्नः	महिमा को	अथ	इस से
पारं ते	आप के अंत को	ऽवाच्यः	अनिन्दय
परम	बिलकुल	सर्वः	सब
ऽविदुषो	न जानने वाले की	स्वमति	अपने बुद्धि के
यदि	अगर	परिनाम	ताकत
ऽसदृशी	टुट फुट	ऽवधि	हद तक
स्तुति	तुता	गृणन्	गाने वाला
ब्रह्मादीनां	ब्रह्मादिकों का	ममापि	मुझको
अपि	भी	एष	यह
तद्	उस महिमा	स्तोत्रे	तुता
अवसन्नाम्	न पुहंचने वाले	हर	हे शंकर
त्वयि	आप के	निरपवादः	अनिन्द्य है
गिरः	वानियां	परिकरः	उद्योग

ही शंकरह चानि महिमुहुक अन्त युस न, आसि जानान करि चानी तो
योदवय सो तोता टुट फूट छि आसवुन, क्योंह ति छुनह तैजुबाह त बड कांह क
ब्रह्मादिकन हुन्ज़ ग्यवमूच वाणी, छनह वातान तोर यति सु महिमा
अमि कारण किअ बुज हुन्द ताकत, युस ग्यवि महिमा छनह तस निन्दा
म्यति कुर उद्योग उन्य ग्यवह भ चानी गुण, अपवादु रोस्तु बनि इ म्यानी तो

ہی شنکرہ چانی مہموک انت یُس نہ آسی زانان کری چانی توتا
یدوئے سو توتا ٹوٹ پھوٹ چھی آسون کیہہ تی تعجب تہ بڈ کا ہنہ کتھا
برہما دکن ہنز گیوچ وانی! چھنہ واتان تور یتی سو مہما
امہ کادات کِت بُدھ ہندی طاقتہ یُس گیوی مہما چھنہ تس نِندا!
متی کر اُدیوگ اوسیہ گیوہ بہ چانی گن اپوادہ رُس بنی یی میانی توتا

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

अतीतः पन्थानं तव स महिमा वाङ्मनसयो-
रतद्व्यावृत्त्यायं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः ॥५॥

अतीतः	दुर है	स	वह महिमा
पन्थानं	रास्ते से	कस्य	किस को
तव	आप का	स्तोतव्यः	तुता करने के काबिल
स	वह	गुणः कतिविध	कैसे गुण वाला है
महिमा	ऐश्वर्य	कस्य	किस का
वाङ	वानी	विषयः	ज्ञान में आया है
मनसयो	मन के	पदेतु	सुरूप पर
अतद्	देहादिक के	अर्वाचीने	स्वाकार
व्यावृत्त्या	मिथ्या करने से	पतति	पोच्छेगा
यं	जिस महिमा को	न मनः	नहीं मन
चकितं	डर कर	कस्य	किस की
अभिधत्ते	कहते हैं	न	न
श्रुतिरपि	वेद भी	वचः	वाणी

वाणी त मनह निश दूर छु चोन महिमा, खूचि २ वीद यथ दिन रात ग्यवान्।
अजताज कमि चाज चाज गुणलीला, किथि हिह त केत्याह गुण चे आसान।
अदह कुस करि चानि स्वरूपुक गुण वर्णन, वाणी त मन ति छुनह तोर वातान॥

وانی تہ منہ نشہ دور چھُ چون مہما، خوچی خوچی وید ییتھ دن رات گیوان ۔
اژتاژ کمی چاژ چاژ گُنہ لیلا، کتھ ہی تہ کیتیاہ گُن چہ آسان
ادہ کُس کرہ چانی سروپُک گُن ورنن، وانی تہ من تی چھُنہ تور واتان

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवत –
स्तव ब्रह्मन् किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम् ।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन्पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता ॥ ८ ॥

मधुस्फीता	शहद से मीठे	ममत्व	मेरी (अपनी)
वाचः	श्रतियों को	तां	इस
परमं अमृतं	अमृतात्मक	वाणीं	वाणी को
निर्मितवतः	बनाने वाला	गुणकथन	गुण गाने के
तव	आप के	पुण्येन	पुण्य से
ब्रह्मन्	हे पूर्णात्मक	भवतः	आप के
किं	किया	पुनाम्	शुद्ध करोंगा
वागपि	वाणी भी	इति	ऐसे
सुरगुरोः	ब्रह्मा जी की	अर्थेऽस्मिन्	प्रयोजन इस
विस्मय पदम्	अचम्भे की जगह है	पुरमथने	हे त्रिगुणात्मन
		बुद्धिः	बुद्धि
		व्यवसिता	दृढ निश्चय वालीहै

मांछि खोतह मधुर अमृत रूपी श्रुति , ब्रह्मा जी सुञ्ज योसह छे वाणी ।
ही पूरण आत्मक यलि न वाति सोति तोत, अदह कोत वातितोत इ म्यिञ अस्तुति
छुस ब चाञ गुण ग्याविथ शुद्ध करान वाणी , अमि प्रयोजन बुद्ध दृढ छि म्यिाञ ॥

مانٛچھ کھوتہٕ مدُر امرت رُوپی شروتی ← برہما جی سنٛز یوسہ چھی وانی
ہی پورن آتمک یَلہٕ نہ وانی سوتی توت اَدہ کتھ وانی تتھ یِی میانہٕ استُتی
چھس بہ چان گن گیوِتھ شُدھ کران وانی امہِ پریوجن بُدھ درڑھ چھی میانی

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलय कृत्
त्रयीवस्तु व्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु।
अभव्यानामस्मिन्वरद रमणीयामरमणीं
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः ॥७॥

तवैश्वर्यं	आपका महिमा	अभव्यानां	संसारिकों को
यत्तद्	अनिर्वाच्य	अस्मिन्	इस महिमा पर
जगद् + उदय	जगत की उतपति	वरद	हे वर देने वाले
रक्षा प्रलय	स्थिती और नाश	रमणीयां	अर्थ वादों से
कृत्	करने वाला	अरमणीं	दुख प्रापक
त्रयी वस्तु	तीन वेदों से साध्य	विहन्तुँ	नष्ट करने के वास्ते
व्यस्तं	बांटा हुवा	व्याक्रोशीं	मंद भेदों के भकवास
तिसृषु	तीन	विदधत	करते हैं
गुण भिन्नासु	गुणों से भेद वाले	इहैक	इस संसार में कई
तनुषु	शरीरों में	जडधियः	अनात्म वादी

ही इच्छा पूर्ण त्रेन वीदन मंज, होवमुत स्वरूप चोन त्रिगुणात्मक।
जगतूच सृष्टि ब्यइ स्थिति संहार, त्रन शरीरन मञ्ज दारवुन छुक।
युस चोन महिमा अनिर्वाची आसुवुन, क्यँह अनात्मवादी युस न जानान।
मूर्खन खोश इवान तलहकानि दुख दिवान, महिमा चोन गालनह बापत तिम बहस करान।

ہی اچھا پورن ترن ویدن منز ! ہومُت سروپ چون ترگُن اتمک
جگتُچ سرشٹی بیہ تھتی سنہار ترن شریرن منز دارون چُھک
یُس چون مہما انرواچی آسُون کیٔنہہ اناتمک وادی یُس نہ زانان
مورکھن خوش ایوان تلہ کنی دوکھ دیوان مہما چون گالنہ باپت تم بحث کران

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

किमीहः किंकायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं
किमाधारो धाता सृजति किमुपादानमिति च
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसुरदुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगताम् ॥८॥

किमीहः	कैसी कृपा वाला	अतर्क्यै	बे सोंच
किं कायः	कैसा शरीर वाला	ऐश्वर्ये	महिमा वाले
स + खलु		त्वय्य	आप पर
किं + उपायः	कैसे युक्ती वाला	ऽनवसुरदुःस्थो	संशय युक्त
त्रिभुवनं	त्रैलोकी को	हतधियः	मोह से मारी अकल वाला
किमाधारो	किस आधार वाला	कुतः को	अनात्म विचार वाला
धाता	ब्रह्मा जी	यं	ऐसा
सृजति	पैदायश करता है	कांश्चिन्	कईयों को
किम्	क्या	मुखरयति	भकवास करते है
उपादानम्	मसाला वाला	मोहाय	मोह करने वास्ते
इति + च	ऐसे ऐसे ही	जगताम्	जगत को

ही ईश्वरह चानि ईश्वरी प्यठ छुय, केंचन मतइ वादियन शक सपदान।
क्युथ शरीर या कोसुह हिश हरकत, कुस उपाय कुस मसालह छुख लगावान।
यमि सूति ब्रह्मा त्रिभवनस सारिसुय, उपदावान छुय इ छिय तिम वनान्।
तिम कोतर्क करि २ सरिसुय जगतस, मूह बडनह वापत छिय बकवास करान।

ہی ایشرہ چانی ایشوری پیٹھ چھُوی کینچن متہ وادین شک سپدان
کیُتھ شریر یا کوسہ ہش حرکت کُس اُپاے کُس مصالحہ چھکھ لگاوان
یمہ سیت برہما تربھونس سارسی اُپداوان چھُوی چھی تمہ ونان
تمہ کوترک کری کری سارسی جگتس موہہ بڈنہ واپت چھی بکواس کران

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोपि जगता-
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति।
अनीशो वा कुर्याद्भुवनजनने कः परिकरो
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे ॥ ६ ॥

अजन्मानो	पैदा न होने वाला।
लोकाः	चौदा भवन
किं	किया है
अवयववन्तो	स्थूल आकार वाले
ऽपि	भी
जगतां	लोकों की
अधिष्ठातारं	ईश्वर को
किं	किये
भवविधिः	उत्पति
अनादृत्य	न मान कर
भवति	होगी

अनीशो	ईश्वर के बिन।
वा	या
कुर्याद	कोन करेगा
भुवन	भवनों के
जनने	पैदाइश पर
कः	कौन है
परिकरो	सामग्री
यतो	क्योंकि
मन्दाः	देहाध्यासी
त्वां + प्रति	आप के महिमापर
अमरवर	चिदानन्द सुरूप
संशेरत	शक करते हैं
इमे	यह

क्येंह वनान जन्मह रोस आसबुन छु त्रिभुवन, क्येंह बनान थूलह रूप पैदह कति गछान। क्येंह वनान जगत छुय कर्ता रोस्तुय, उत्पति किथह पाठ्य अथ छि सपदान। क्येंह वनान ईश्वर योद आसि मानोन, कमि सामानह सूति छु उपदावान। ही शम्भो इथय पाठ्य दीह अध्यासी, चानिस महिमाहस प्यठ छि शक करान।

کینہہ ونان جنمہ روس آسہ وُن چھُو ترِبھون کینہہ ونان تھُولہ رُوپ پیدہ کنی گژھان
کینہہ ونان جگت چھُوی کرتا رُوستُوی اُتپتی کتھہ پاٹھ اتھ چھی سپدان
کینہہ ونان ایشر یُد اسی مانون کمی سامانہ سُتی چھُو اوپدادان
ہی شمبھو یتھی پاٹھی دیہہ ادھیاسی چانس مہماہس پیٹھ چھی شک کران

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च ।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥ १० ॥

त्रयी	वेद	रुचीनां	श्रद्धाओं के
सांख्यं	विचार	वैचित्र्याद्	नाना प्रकार
योगः	यम नियम आदि	ऋजु	सीदा
पशुपति	शिव उपासना	कुटिल	टेडा
मतं	मत	नाना पथ	बहुत रास्तों पर
वैष्णवम्	विष्णुभक्ति	जुषां	चलने वाले
इति	ऐसे	नृणाम्	मनुषों को
प्रभिन्ने	अनेक प्रकार	एको	एक ही
प्रस्थाने	रास्तों पर	गम्यः	पाने के काबील
परम् + इदं	अच्छा यह है	त्वं असि	आप ही हैं
अदः पथ्यम्	साधु वही है	पयसाम्	पानीयों को
इति च	इसी तरह	अर्णव इव	समन्दर जैसा

क्यैंह मत वनान वेदन उन्मुत धर्म, क्यैंह वनान बिचार क्यैंह योग साधान ।
क्यैंह शिव नाथ सुँज़ भक्ति क्यैंह वनान, नारायणह सुँज़ भक्ति सीवा ।
इथय पाठ्य ब्योन २ वति प्यठ पकि २, पनुनि २ शौक तिम जान छि ज़ानान ।
स्यजि वति या उल्टह वति प्यठ पकि २, चुय छुख प्रावणी तिम छि प्रावान ।
इथह पाठ्य सारिय नदी नालह ब्योन २, आखिरस समन्दरस मंज छि वातान ॥

کینہہ مت ونان ویدن اُنمت دھرم کینہہ ونان وچار کینہہ یوگ سادھنا
کینہہ شِو ناتھہ سنز بھکتی کینہہ ونان نارائنہ سنز بھکتی سیوا
یتھے پانٹھی بیون بیون وتی پیٹھ پکی پکی پننی پننی شوق تم جان چھی زانان
سیزی وتی یا اُلٹہ وتی پیٹھ پکی پکی چھی چھُو پاسہ پراوتی تم چھی پراوان
یتھہ پانٹھی سارے ندی نالہ بیون بیون آخرس سمندرس منز چھی واتان.

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम्।
सुरास्तां तामृद्धिं विदधति भवद्भ्रूप्रणिहितां
नहि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति ॥११॥

महोक्षः	बुढा बैल	सुराः	ब्रह्मादि
खट्वाङ्गं	मुसल [चारपाइ खुर]	तां तां	उस उस
परशुः	तबर	ऋद्धिं	ऐश्वर्य को
अजिनं	मृग खाल	विदधति	दिया हुवा
भस्म	चिता भस्म	भवद्	आप के
फणिनः	सांप	भ्रूप्रणिहितां	भूवें से पाई हुइ
कपालं	नृकरोटी [कलखपर]	नहि	नहीं
चेती	भी ऐसी	स्वात्मारामं	सच्चिदानन्द
यत् + तव	इतना ही है	विषय	विषय भास रूप
	आप का	मृगतृष्णा	भ्रम
वरद	वर देने वाला	भ्रमयति	सत्यत्व वादी करती है
तन्त्रः	काम की		
उपकरणम्	सामग्री		

ि वरदायक दान्द मुहुल तबर भस्म, मृग खाल कलह खपर सरूफ चे आसान।
ामि चापत छय इ चेय सामग्री, योसह पानस सूति छय चे रोजान।
ुम्बह हरकच सूति ब्रह्मादिकन छुख, रंगह २ कुसम २ ऐश्वरी दिवान।
त चित् आनन्द छुख विषय मृग तृष्णा, सूति आसिथ छुय न भ्रुमरावान्॥

ہی ورد ایک داند مُہُل تبر بھسم مرگ کھال کالہ کھپر سُرُف چہ آسان
کامی بابتھ چھئی ای چیی سامگری یُس پانس سیت چھئی چہ روزان
ہُمبہ ہرکچ سیت برہمادکن چھکھ رنگہ رنگہ قسم قسم ایشوری دیوان
ست چت آنند چھکھ وشے مرگ ترشنا سیت آسِتھ چھئی نہ برمراوان

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

ध्रुवं कश्चित् सर्वं सकलमपरस्तु ध्रुवमिदं
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये।
समस्तेऽप्येतस्मिन् पुरमथन तैर्विस्मित इव
स्तुवन्जीह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ॥१२॥

ध्रुवं	सत्य है
कश्चित	कुछ लोक
सर्वं	सब जगत
सकलं	सब जगत
अपरस्तु	और वेदान्त
ऽध्रुवम्	मिथ्या ही है
इदं	यह नाम रूप
परो	अन्य युक्ति
ध्रौव्य	सत्य असत्य
अध्रौव्य	विषय वाले
जगति	संसार पर
गदति	कहते हैं
व्यस्त	नमोद प्रत्यच
विषये	पदार्थ वाले
समस्तेप्ये	सब भी
एतस्मिन्	इस
पुरमथन	हे त्रिगुण मल हारक
तैः	उनके मतों से
विस्मित	हैरान हुए
इव	जैसे
स्तवन	स्तुती करता हुआ
जीह्रेमि	लज्जित होता हूँ
त्वां	आप को
न+खलु	क्या नहीं करता हूँ
ननु	जरूर
धृष्टा	निर्लज्जित
मुखरता	भक्ति रस की कहानियाँ

क्येंह वनान सत क्येंह वनान असत यथ जगतस, क्येंह वनान अनिर्वाची छुय ई आसुवन। नाना प्रकारह मतह वादियन हुन्दि किञ, ही शिवह हैराण छुस ब सपदान। चानि भक्ति हुन्दि जोरह निर्लज्जित बनिथ, बकवासि ह्युह छुस तुता चानि करान

کینہہ ونان ست کینہہ ونان است یتھ جگتس کینہہ ونان انرواچی چھُہ یہ آسُون
نانا پرکارہ متہ وادین ہندی کن ہی شیوہ حیران چھُس بہ سپدان
چانی بھکتی ہندی زورہ نرلجت بنتھ بکواسی ہیوہ چھُس تتہ چانی کران

CC-0.Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

तवैश्वर्यं यत्नाद्यदुपरि विरिञ्चो हरिरधः
परिच्छेत्तुँ यातावनलमनलस्कन्द वपुषः।
ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरु गृणद्भ्यां गिरिशयत्
स्वयँ तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति।१३।

तवैश्वर्यं	आप की महिमा	ततो	फिर
यत्नाद्	यतन से	भक्ति	पुज्यो पर राग
यत्	जो	श्रद्धा	गुरु वेदान्त वाक्यों पर श्रदा
उपरि	उपर की तरफ		
विरिंचो	ब्रह्मा जी	भरगुरु	बहुत गौरव से
हरि	विष्णु	गृणद्भ्यां	तुता करने वालों को
अधः	नीचे की तरफ	गिरिश	हे कैलास पर रहने वाले
परिच्छेत्तुँ	मापने के लिए	यत्	जो
यातौ	गई हुई	स्वयं	खुद ही
अनलं	कामयाब न हुये	तस्थे	अपरोक्ष हुवा था
अनलःकन्दः	ज्योतिर्मय (जयते लिङ्ग)	ताभ्यां	उनको
		तव किं	आपकी क्या
वपुषः	सुरूप को	अनुवृत्तिः	सेवा
		न	नही
		फलति	फल देती है

चोन ज्योति स्वरूप ह्यरि किञ ब्रह्मा, वोनि किञ विष्णो मेनुनि द्राय।
दोशवय थकि स्यठाह अन्द लोबुख न चोनुय, दोशवय छारिय तिम वापस द्राय।
तमि पतह श्रद्धा भक्ति किञ तिमव चेय, ही कैलास वासी करहय तोता।
पानय सन्मुख ह्युत थक दर्शुन, चानि सीवाइ हुन्द फल ई नेरान॥

چون جیوتی سروپ ہری کن برہما　یُونی کن وِشنو مینی درائے
دوشوئے تھکی سیٹھاہ اندلوکھ چونوی　دوشئے چھری تم واپس درائے
تمی پتہ شردا بھکتی کن تمو چیئے　ہی کیلاس واسی کرئے توتا
پانے سنمکھ دیوتہ تھک درشن　چانی سیوای ہند پھل ئی تیران

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

अयत्नादासाद्य त्रिभुवनमवैरिव्यतिकरं
दशास्यो यद्बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान्।
शिरःपद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबलेः
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम् १४

अयत्नाद्	बिना कोशिष	शिरः	सिर रुपी
आसाद्य	पा कर	पद्म	कमल
त्रिभुवनं	त्रिलोकी को	श्रेणी	कतार से
अवैरि)	शुत्र के भय	रचित	किइ हुइ
व्यतिकरं)	रहित	चरण	चरण
दशास्यो	रावणासुर	अम्बुरुह	कमल के
यद् बाहू-	जो बुजावों को	बलेः	पुजा वाले
नभृत	धारने लगा	स्थिराः याः	मजबूत हुइ
रणकण्डू	युद्ध पर	त्वद्भक्तेः	आपकी भक्ति का
परवशान्	परिश्रम वाले	त्रिपुरहर	त्रिगुणातीत
		विस्फूर्जितं	फल है
		इदं	यह

ही त्रिपुर हर रावणन युस यतह रोस्तुय, युद्ध बापत वोन दारिन शत्रु गालिन।
शत्रव रोस्तुय जगतस ओस फेरवुन, सारिय त्रिभुवनुक युस राज प्रोवुन।
ओस तस सु महिमा पननि भक्ति हुन्द, कलह चटि २ ओस माल बनावान।
सोय पनुनि कलह माल चानेन पंपोशि पादन, प्यठ ओस पूजाइ तिम चे लागान।

ہی ترپور ہرہ راون یُس یتہ روستُوی یدہ باپت بونہ داران شتر گالان
شترو روستُوی جگتس اوس پھیروُن ساری ترِبھونک راج یُس پراون
اوس تس سُہ مہما پننہ بھکتی ہند کلہ چٹی چٹی اوس مالہ بناوان
سُوی پنُن کلہ مال چانین پمپوشہ پادن پیٹھ اوس پوجائی تمہ چہ لاگان

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं
बलात्कैलासेपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः।
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलितांगुष्ठशिरसि
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद्ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः १५

अमुष्य	उस रावण को	अलभ्या	पाने के नाकाबिल
त्वत्सेवा	आपकी सेवा से	पाताले	पाताल में
सम् अधिगत	पाई हुई	अपि	भी
सारं	ताकत वाले	अलस चलित	आलस से दबाई हुई
भुजवनं	बुज जंगल को	अङ्गुष्ट शिरसि	अंगुठे के नोक से
बलात्	जोर से	प्रतिष्ठा	रहने की जगह
कैलासे अपि	कैलास पर्वत भी	त्वय्य	आप पर
त्वत्	आप के	आसीद्	था
अधिवसतौ	निवास्थान	ध्रुवम्	निश्चय करके
विक्रमयतः	पूर्ण पौरष चलाने वाले	उपचितो	एश्वर्य वाला
		मुह्यति	मोह को पाता है
		खलः	दुष्ट [नष्ट बुद्धि वाला]

ही शंकर तमि रावणन चाने, सीवाइ किञ बोज़ त बल प्रोवुन।
तमि बलहके मदह चानिस निवासस, कैलासह पर्वतस पालि अरह ह्यातुव करुन।
त्वि आलुछि पाठ्य पननि न्योठह के, नोखह सूति युथुय पृथ्वी दबावथन।
अदह तस तिथिस रावनस पाताल्स, मञ्ज ठहरनस कांह जाय न क्यंह लबन।

ہی شنکر تم راونن چانے سیوای کِن بوز تہ بل پراوُن
تمی بلہ کے مدہ چانس نواسس کیلاسہ پربتس پٹھ ارہ ہیوتن کرُن
تمی آلچھ پاٹھی پننی نیوٹھہ کے نوکہ سیتی یُتھی پرتھوی دباوتھن
ادہ تس تتھس راونس پاتالس منز ٹھہرنس کانہہ جاے نہ کیتھہ لبن

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सतीम्
अधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयत्रिभुवनः।
न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयो-
र्नकस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः॥१६॥

		न	नही
यत्	जो	तत्	वह
ऋद्धिं	संपदा	चित्रं	अचम्भा है
सुत्राम्णो	इन्द्र की	तस्मिन्	उस पर
वरद	हे वर देने वाले	वरिवसितरि	सेवा करने वाले
परम उच्चैः	बहुत उंचे	त्वत्	आप के
अपि	भी	चरणयोः	चरणो की
सतीम्	होने वाले	न	नही
अधः चक्रे	नीचे दबाई है	कस्य अपि	किस को भी
बाणः	बाण सुर ने	उन्नति	उन्नति के लिए
परिजन	नोकरों की	भवति	होती है
विधेय	मान हानी के रक्षक	शिरसः	सिर
त्रिभुवनः	त्रैलोकी वाले	त्वय्य	तुम पर
		वनतिः	प्रणाम करता

ही वरद यमि बाणासुरन पननि विभवह किज, इन्द्रह सञ्ज सम्पदा बान दबावुन।
अदह तस चानि चरण सीवाइ हुन्द फल, त्रैलोकी पानस आदीन करुन।
छुनह तेजुब सयु प्रणाम चे शेरह किञ, कस अकिस छुनह अदह उन्नति बनान।

ہی ورد یمی باناسُرن پننی وبھوہ کِن اندرہ سنز سمپدا بُون دبادان
اَدہ تس چانی چرن سیواے ہُند پھل ترلوکی پانس ماتحت کرن
چھُونہ تعجب سیُ پرنام چہ شرہ کِن کس اکِس چھنہ اَدہ اونتی بنان

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

अकाण्ड ब्रह्माण्डच्चयचकितदेवा सुर कृपा
विधेयस्यासीद्यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः ।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोपि श्लाघ्यो भुवनभयभङ्ग व्यसनिनः ॥१७॥

अकाण्ड	बे मौका [अनियत समय पर]	स	वह
		कल्माषः	कालाई
ब्रह्माण्ड	त्रिलोकी के	कण्ठे	गले पर
च्चय	नाश होने पर	तव न	आप के नही
चकित	डरे हुये	कुरुते	करता है
देव	देव	न	नही
असुर	असुर	श्रियम्	शोभा को करता है
कृपा	दया पर	अहो !	अचम्बा है
विधेयस्य	लगे हुये	विकारः	तबदीली
आसीत	था	अपि	भी
यः	जो	श्लाघ्यो	फक्र होता है
त्रिनयन	हे तीन नेत्र वाले	भुवन	लोगों के
विषं	जहर को	भयभङ्गः	भय दूर करने पर
संहृतवत	पीने वाले	व्यसनिनः	शोक वाले

ही त्रिलोचनह बेमोकह त्रैलोक नाशस प्यठ , राचस त दीव आसि खोचानी ।
योसह दया चे करथख छुनथख जहर चथ, तमि स्यति अद बचेइ त्रैलोकी ।
सुय सियाही निशानह चानिस हटिस प्यठ, युस दिवान शूभा ब्यइ थ्यकनी ।
त्रैलोकीहुन्दिस खोफस नष्ट करनस प्यठ , छुख चुय शोकह सोस रोजानी ॥

ہی ترلوچن بے موقعہ ترلوکی ناشس پیٹھ راکھس تہ دیو آسس خوچانی
یوسہ دیا چہ کرتھک چھنتھک زہر چیتھ تمی سیت ادہ بچیئی ترلوکی
سُوہی سیاہی نشانہ چانس ہٹس پیٹھ یُس دیوان شوبھا بیہ تھکنی
ترلوکی ہندس خوفس نشٹ کرنس پیٹھ چھک چہ شوق سُس رونانی

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः ।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत्
स्मरः स्मर्तव्यात्मा नहि वशिषु पथ्यः परिभवः ।१८।

असिद्धार्था	नाकामयाब	स पश्यन्	वह देखता हुवा
नैव	नहीं हो	ईष	हे ईश्वर
क्वचिद्	किसी से	त्वां	आपको
अपि	भी	इतर	सामान्य
स देव	देव सहित	सुर	देवताओं
असुर	असुर	साधारणम्	बराबर
नरेः	मनुष्यों पर	अभूत	हुवा था
निवर्तन्ते	वापस नहीं आते हैं	स्मरः	कामदेव
नित्यं	हर वख्त	स्मर्तव्यात्मा	सोंच के काबिल रुप वाला
जगति	संसार में	नहि	नहीं
जयिनो	जीत करने वाले	वशिषु	योगियों को
यस्य	जिस के	पथ्यः	अच्छा फल निकालता है
विशिखाः	तीर	परिभवः	अनादर

ही भगवानह युस कामदीवह सुन्द तीर, दीवन मनुष्यन राक्षसन न त्रावान ।
जगतस मंज सारिनुय युस जेनान् नाकाम गछ्थि युस न वापस इवान ।
आव चे निश भस्म गव तस कामदीवस, सामान्य दीव ह्युह आसुय चेय वुछान
सुवि सपद सोरनस लायक यूगियण करि, अनादर तस फल तेथुय छु नेरान ॥

ہی بھگوانہ یُس کامدیو سُند تیر دیون منُشن راکھسن نہ ترٛاوان
جگتس منز سارنی یُس زیناں ناکام گژھت یُس نہ واپس ایوان
آو چہ نش بھسم گو تس کامدیوس ساماًنی دیو ہیو اوسی چھی وُچھان
سُوتی سپد سُرنس لایُق یوگین کرنی انادرس پھل تھتیو چھو نیران

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

मही पादाघाताद्व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम् ।
मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता ॥ १९ ॥

मही	भूलोक	अनिभृत	हर वखत
पादाघाताद	पैर के दबाव से	जटातडित तटा	दबाइ हुइ तरफ वाला
व्रजति	जाती है	जगत	जगत की
सहसा	अचानक	रचायै	रक्षा के लिये
संशय पदं	शक में	त्वं	आप
पदं विष्णु	अन्तरिक्ष भवनों को	नटसि	नाच कर
भ्राम्यद्जनः	हिलाइ हुइ भुज	ननु	निश्चय करके
परिघरुग्न	तोफों से इरद गिरद	वामैव	नियमों से
	किइ हुये	विभुता	ऐश्वरय होता है
ग्रहगणम	तारामंडल वाले		
मुहुः	बार बार		
द्यौः	सुर लोक		
दौस्थं	चकर को		
याति	पाता है		

पृथ्वी चानेन पादन हुन्दि दबावह सूती अचानक शुकस मंज गछान
चानेन बोजन हुन्दि ह्यार कुन हिलवनह किन्य तारामंडुल सोरुय चंचल सपदान
चाने जटा मुकुटह रगडि सूती बार बार सोरग चकरस छु वातान
भगवानह जगतुचि रचाइ बापत छुख नचान विभूता चान्य छिनह कॅह जानान ॥

پرتھوی چانن پادن ہندی دباوہ سیتی اچانک شکس منز گچھان
چانن بوزن ہندی ہیر کن ہلاونہ کن تارامنڈل سورُوی چنچل سپدان
چانے جٹا مُوکٹہ رگڑی سیتی بار بار سورگ چکرس چھُو واتان
بھگوانہ جگتچ رکھیا باپت نچان چھکھ بُوتا پانی چھنہ کینہ زانان

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

विययद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते ।
जगद्द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि–
त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः ॥ २० ॥

वियद्व्यापीः	आकाश में फैला हुवा	जगद्वीपा कारं	भूलोक जजीरे की शकल वाला
तारागण	तारा समुह	जलधि वलयं	समन्दरने घेरा हुवा
गुणित	जानने में आया हुवा	तेन	उस प्रवाहने
फेनो	कफ दरया के	कृतं	किया है
उद्गमरुचिः	जमने की शुभा वाले	इति	ऐसे
प्रवाहो	फैलाव	अने नैव	उसी विधी से ही
वारां यः	पाणियों का जो	उन्नेयं	जानने के योग्य
पृषतलघु	बिन्द छ्चेन्ट सा पतला	धृत महिम	हे माय प्रेरक
दृष्टः	नजर में आया हुवा	दिव्यं	अनिर्वाच्य
शिरसि ते	सिर पर आप के	तव	आप का
		वपुः	वास्तव रूप

आकाशस मंज फैल्योमुत तारामण्डल, दरियावस कफ ह्युह शोभा दिवान ।
पान्युक यूत फैलाव चानि शेरुहके अकिस बून्दस समान बोजनह इवान ।
सोय अख बून्द जगतह दीपह शकलि ब्यइ समन्दर, तथि अन्द २ कुर ह्युह
घेरह करान । इथय पाठ्य जाननह वापत ही मायाधारी, वास्तव स्वरूप चोन
अनिर्वाची छु आसान ॥

آکاشس منز پھیلومت تارا منڈل دریاوس کفہ ہیو شوبھا دیوان
پانیک یوت پھیلاو چانی شیرہ کے اکس بوندس سمان بوزنہ ایوان
سوی اکھ بوند جگتہ دیپ شکلی بیہ سمندر تتھ اندی اندی کرنہ ہیو گھیرہ کران
اتھے پاٹھی زاننہ بایت ہی مایا دھاری واستو سروپ چانی انردا چی چھو آسان

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो-
रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथ चरणपाणिः शर इति ।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधि-
र्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः ।२१।

रथः	रथ	दिधक्षोः	जलाने के इच्छा वाले
क्षोणी	पृथवी	ते	आप को
यन्ता	रथ चलाने वाला	कोयं	कोन यह
शतधृतिः	ब्रह्मा	त्रिपुर	त्रिपुरासुररूप
गेन्द्रो	समीरु पर्वत	तृण	तिनके को
धनुः	कमान	आडम्बर	जमगठकी
अथो	और	विधिः	तरीका
रथाङ्गो	दो चक्र	विधेयै	भक्तों से
चन्द्रार्कौ	चांद व सूर्य	क्रीडन्त्यः	खेलते हुई
रथ चरणपाणिः	विष्णु	न खलु	नहीं है
शरः	तीर	परतन्त्रा	नियति के
इति	ऐसे	प्रभुधियः	ईश्वरों की खयालात

त्रिपुरह त्रेन भस्म करबुनि रथ चे पृथ्वी, ब्रह्मा रथस छुय चलावान ।
सुमेरु पर्वत कमान रथ चक्र सिर्यि चन्द्रम, विष्णो पानह छुय तीर चे आसान ।
चलावनु च इच्छा छुख चुय पानह ईश्वर, परतन्त्र रोस्तुय च खेल करान ॥

ترپورہ ترن بسم کرونی رتھ چھہ پرتھوی برہما رتھس چھوی چلاوان
سمیر پربت کمان رتھ چکر سریہ چندرمہ وشنو پانہ تیر چھوی چہ آسان
چلاونچ اچھا چھکھ چھی پانہ ایشور پرتنتر روستی چہ کھیل کران

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

हरिस्ते साहस्रं कमल बलिमाधाय पदयो-
र्यदेकोने तस्मिन् निजमुदहरन्नेत्र कमलम् ।
गतो भक्त्युद्रेकः परि नतिमसौ चक्र वपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम् !! २२ ॥

हरिः	नारायण	गतः	हुवाथा
ते	आप के	भक्त्युद्रेकः	भक्ती की तीव्रता
साहस्रं	हजार गिनती	परिणतं	फलरूप
कमल बलिं	कमलसे पूजा	असौ	वह
आधाय	करके	चक्रवपुषः	नारायण की
पदयो	पैरोंकी	त्रियाणां	तीन की
यत	जो	रक्षायै	रक्षा के लिई
एकोने	एक से कम	त्रिपुरहर	त्रिमल हारक
तस्मिन्	उस हजार पर	जागर्ति	हुशयार
निजं	अपना	जगताम	भवनों की।
उदहरन	चढाया था		
नेत्रकमलं	नेत्र कमलको		

ही त्रिपुर हरह चानि पाद पूजाइ यलि, विष्णोहस सासकमल ओसोयलागान।
अख पंपोश गोस कम पतुन नेत्र कोडुन, चानि पादह पूजाइ पुशरोवुन।
अदह बन्यव त्रैलोकी हुञ्जि रछाइ हुन्द, हीतो सु भक्ति हुँद फल छुय ई बनान।

ہی ترپورہ ہرہ چانی پاد پُوجاے یلی وشنوہس ساس کمل آسی چھ لاگن
اکھ پمپوش گوس کم پتن نیتر کڈون چانی پاد پُوجاے پُوشرادن
اده بنیو ترلوکی ہنزی رچھائی ہند ستو سُو بھکتی ہند پھل چھی بنن

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते ।
अतस्त्वां उत्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदान प्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसुजनः ॥ २३ ॥

क्रतौ	त्रिविधकर्म वाङ्ग मनो वाचक	अतस्त्वां	उससे आप को
		उत्प्रेक्ष्य	जान कर
सुप्ते	नष्ट होने पर	क्रतुषु	यज्ञों पर
जाग्रत	होशयार हो	फलदान	फल देने के
त्वमसि	आप है	प्रति भुवं	जिमवार को
फल योगे	फलदेने पर	श्रुतौ	सतशास्त्रों पर
क्रतुमतां	यज्ञ करने वालों को	श्रद्धां	श्रदा भक्ती
क्व कर्म	कहां काम	बद्ध्वा	रख के
प्रध्वस्तं	नष्ट होगा	दृढ परिकरः	दृढ उद्योग
फलति	फलदेवेगा	कर्म सुजनः	कामो पर लोग
पुरुषाराधनं	किसी की सेवाके		
ऋते	बिना		

यज्ञ करन वाल्यन यज्ञ मोक्लनस प्यठ फल दिनह बापथ हुशयार च रोजान,
चानि सीवाइ रोस यज्ञ करन वाल्यन यज्ञुक फल तिमन कतिछु मेलान ।
सारिनुय यज्ञन प्यठ फलदिनह बापत सारिथ जिमहदार चेय छिय जानान,
अदह मनुष्य वीदस प्यठ श्रद्धा गण्डिगण्डि कर्म करनुक उद्योग तिम कराम ॥

یگنیہ کرن والین یگنیہ سُوکلنس پیٹھ پھل دنہ باپتھ ہوشیار چھیہ روزان
چانی سیوائے روس یگنیہ کرن والین یگنیُک پھل تمن کتھ چھُو میلان
سارنی یگنین پیٹھ پھل دنہ باپت ساریسی ذمہ دار چھی چھی زانان
ادہ منش ویدس پیٹھ شردھا گنڈ گنڈ کرمُک ادوگ تم کران

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृता-
मृषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः ।
क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो
ध्रुवं कर्तु श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखा ॥ २४ ॥

क्रिया दक्षः	कर्मो पर दाना	क्रतुभ्रंशः	यज्ञ का नाश
दक्षः	दक्ष प्रजापति	त्वत्तः	आप से
क्रतु पतिः	यजमान	क्रतुफल	यज्ञ का फल
अधीशः	अधिष्ठान	विधान	देने पर
तनुभ्रतां	देहधारियों का	व्यसनि नः	शोक वाले
ऋषीणां	ऋषयों का	ध्रुवं	निश्चय से
आर्त्विजं	तन्त्र का काम	कर्तुः	यजमान
शरणद	हे भक्तो को पालने वाले	श्रदा विधुरम	श्रदा हीन
सदस्या	सभा के गुण दोषचिन्तक	अभिचाराय	बुरे फल के वास्ते
सुरगणाः	इन्द्र आदि देवो का समुह	हि	ही
		मखा	यज्ञ बनते हैं

भगवान दछि प्रजापत क्रियाय प्यठ ओस हुशियार देहिधारियन हुँद स्वामी युथ यजमान दीवता त इन्द्राज़ आसि सभासद यज्ञिकि ऋषि आसि अमि यज्ञिक ब्रह्मण यज्ञुक फल दिनस प्यठ चे शौकह सुस्तिस चानि भावनाय रोस सु ओस दछि यजमान नाश सपुद चानि किञ तथ तिथिस यज्ञस चानि भावनाइ रोस यज्ञ उल्टह फल दिवान ॥

بھگوانہ دکھی پرجاپت کریائی پیٹھ اوس ہوشیار دِہہ دارین ہُنٛد سوامی یُتھ یجمن
دیوتا تہ اندراجہ آسی سبھاسد یگینک ریشی آسی امی یگینک برہمن
یگنبوک پھل دِنس پیٹھ چہ شوقہ سنٛتس چانی بھاونائے روس سو اوس دکھی یجمن
ناش سپد چانی کِن تتھ تِتھِس یگیس چانی بھاونائے روس یگنیہ الٹہ پھل دیوان

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा ।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमऽपि सपत्राकृतममुं
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः ॥ २५ ॥

प्रजानाथं	ब्रह्मा का	धनुष पाणि	कमान हाथ वाले
नाथ	हे स्वामी	यातं	भागे हुये
प्रसभं	जोर से	सपत्राकृतं	तीर का लक्ष
अभिकं	काम के	अमुं	उस का
स्वां	अपनी	त्रिसन्तं	डरे हुये
दुहितरं	कन्या को	ते	आप से
गतं	गये हुये	ऽद्यापि	अब भी
रोहित	हिरण	त्यजति	छोढता है
भूतां	बने हुये	न	नहीं
रिरमयिषु	मैथन के इच्छा से	मृगव्याध	शिकारी का
मृष्यस्य	मृग के	रभसः	भय
वपुषा	शरीर से		

ब्रह्मा रूपी मन कामनाइ जोरः क्रिन बुज रूप कन्याइ पतः ओस दोरान सु बनिथ हिरणी अमि सुन्दि पतः दोरन क्रिन ब्रह्मा रूप मनन ति मृग रूप दोरुन अद चूय शिकारि बनिथ तीर कमान दारिथ मन रूप ब्रह्मा निशानः कुर्थन आकाशस पिठ वातिमुतिस ब्रह्माजियस तस चोन शिकार्य खोफ छुनह चलन ॥

برہما روپی من کامنائے زورہ کِن بُز روپ کنیائی اوس پتہ دوران
شو بنتھ ہرنی امسندی پتہ دورہ کِن برہما روپ منن تی مرگہ روپ دارن
ادہ چوی شکاری بنتھ تیر کمان دارتھ من روپ برہما نشانہ کرتھن
آکاشس پیٹھ واتمتس برہما جیس تس چون شکاری خوف چھونہ تس چلن

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

अपूर्वं लावण्यं विवसनतनोस्ते विमृशतां
मुनीनां दाराणां समजनि स कोपव्यतिकरः ।
यतोभग्ने गुह्ये सकृदऽपि सपर्यां विदधतां
ध्रुवं मोक्षो श्लीलं किमऽपि पुरुषार्थं प्रसवितेः ॥२६॥

अपूर्वं	अलौकिक	यतो	जिस
लावण्यं	सौन्दर्य	भग्ने गुह्य	टूटे हुए लिंग को
विवसनतनोः	दिगम्बर देवादि	सकृदपि	एकही दफा भी
ते	आपके	सपर्या	पूजा
विमृषतां	देखते हुए	विददतां	करने वालों को
मुनीनां	ऋषियों के	ध्रुवं	निश्चय से
दाराणां	स्त्रियों को	मोक्षो	मोक्ष
समजनि	पैदा हुआ	अश्लीलं	गाली
सकोपि	वह कोई	किमपि	कोई
व्यतिकरः	चित्त विकार	पुरुषार्थ	प्रयोजन को
		प्रसवि ते	देने वाला आप

ही शङ्कर चोन दिगम्बर स्वरूप युस-ओस अलौकिक सुन्दर निरावर्ण, सु रू
चोन वुछिथुय ऋषियन हुञ्जन त्रियन सपुद-अन्दरह चित्विकाराह गव तिमन
भ्रम शापह किञ फुटिमुतिस लिङ्गस पूजा करुख-मोक्ष कामना गई तिमन पूरण
तनह शिवलिङ्ग पूजा करनुह सूती-कमह २कामनाई सिद्ध छि सपदान ॥

ہی شنکرہ چون دگمبر سروپ یس اوس الوکک سندر نروان
سروپ چون وچھتھ ریشین ہنزن ترین سپد اندرہ چت وکارہ گو تمن پرم
شاپہ کنی فٹمتس لنگس پوجا کرکھ موکش کامنا گیہ تمن پورن
تنہ شیولنگ پوجا کرنہ ستی کمہ کامنا سدھ چھی سپدان

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

स्वलावण्याशंसाधृतधनुषमह्नाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि ।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत देहार्धघटना-
दवैति त्वामद्धा वत वरद मुग्धा युवतयः ॥ २७ ॥

स्वलावन्यः	अपने सौन्दर्य को	यदिस्त्रैणं	जब स्त्रीजन
आ शंसा	कहने वाली	देवी	पार्वती
धृत धनुष	पकडे हुये	यमनिरत	हे जितीन्द्रिय
	कमान वाला	देहार्ध	अर्धनारीश्वर
अहनाय	जठ	घटनात	को होने से
तृणवत	तीनके की तरह	अवैति	जानेगा
पुरः	अपने सामने	त्वां	आप को
प्लुष्टं	दग्ध होइ को	अद्धा	प्रत्यत्त
दृष्ट्वा	देख कर	वत वरद	हे कामदेव जलाने वाला
पुरमथन	हे त्रिमलहारक	मुगधा	मूढ है
पुष्पायुधमऽपि	कामदेव को भी	युवतयः	औरतें

ी त्रिगुण हारक पनुनि सुन्दरता थ्यकवुन,पार्वती पानस सन्मुख आस वुछन:
ास कचि हुन्दि पाठ्य तस कामदीवस, भस्म गछान चानि अकि दृष्टि किञ।
ी वरदायक यालि सु ज़ानि छुखं त्रियव, ज्यून्मुत च त्यालि त्रिई मूढ़ छि सपदन।

ہی ترگن ہارک پنین سُندرتا ٹھیکوِن پاروتی پانس سنمکھ آسی دُچھن
گژھاس کچی ہندی پاٹھی تس کامدیوس بھسم گژھان چھانی اکی درشٹی کِن
ہی وردایک یلی سو زانی ژھوکھ ترِیوِ زیونمت چھ تی ترِیہ موڈھ چھی سپدن

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा-
श्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः ।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तॄणां वरद परमं मङ्गलमसि ॥ २८ ॥

श्मशानेषु	श्मशानो पर	अमङ्गल्यं	बुरा
आक्रीडा	क्रीडा करना	शीलं	आचार
स्मरहर	कामनाशक	तव भवतु	आपका हो
पिषाचा	भूत प्रीत	नामैवं	निश्चय से
सहचरा	परिवारहे	अखिलं	सब
चिताभस्मालीपः	चिताभस्म मला है	तथापि	फिर भी
		स्मर्तॄणां	भक्तों को
स्रगपि	माला भी	वरद	वर देने वाले
नृकरोटी	मनुष्य के	परमं	बडा
पारकरः	सिरों का कतार	मङ्गलमऽसि	कल्याण हो

ही वरदायक श्मशानन प्यठ खेल करनी, भूत प्रीत परिवार चोन आसवुन । चिता भस्म अतुर चाञ चे मनुष्य कलह माल नाल्य, युथ आचार चोन युद छु आसवुन । आसितन युथुय चाल चलन चोनुय, भक्तिन प्यठ मंगल दिवुन छुख आसवुन ॥

ہی وردایک شمشانن پیٹھ کھیل کرنی بھوت پریت پریوار چون آسون
چتا بھسم عطر چانی چھ منش کلہ مال نالہ یتھ آچار چون یتھ آسون
آستن یتھوی چال چلن چونی بھکتن پیٹھ منگل دیون چھکھ آسون

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः ।
यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्ज्यामृतमये
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान् ॥ २९ ।

मनः	चित से उलठा	यत	जिस
प्रत्यक	असत्य जड दुःख [जगत से उलठा]	आलोक्य	अनुभव करके
		अह्लादं	आनन्द को
चित्ते	चिदानन्द रूप	ह्रद इव	जील में सा
सविधं	विधी सहित	निमज्ज्य	डुब हुये
अवधाय	रखकर	ऽमृत मये	अमृत रूप
आत्मरुतः	जीते हुये प्राण	दधति	अपरोक्ष करता
प्रहृष्यत	हर्षित हुये	अन्तः	अन्तर्मुख भाव से
रोमाणः	रोम वाले	तत्वम	तत्वं लक्षण से
प्रमद	आनन्द	किमपि	अनिर्वाच्य
उत्सिंचित	बरे हुये	यमिनः	योगीश्वर [नाम रूप रहित]
दृशः	आंख वाले	तत्किल भवान	वही है आप

जगतह निश बर्खलाफ युस चित्त स्वरूप तथ वारह पाठ्य मनह सुस जेनिमति प्राण सोस । रूम रूम आसन बुथदन्य सुखरूपी अशि स्रोत बरिथुय नेत्रव सोस । युस यूगीश्वर अमृत रूपी हृदय सरसुय फटिमति आनन्दह सोस । अपरोची करिथ चानिस स्वरूपस सुय । चान स्वरूप अनिर्वाची नाम रूप रोस ॥

جگتہ نش برخلاف یُس چیت سروپ تتھ وارہ پاٹھی منہ سُس زینمتی پرانہ سُس
رُوم رُوم آسن ادھ تھدنیہ سُکھ رُوپی اشی سیت بھرتھی نیترو سُس
یُس یوگیشور امرت رُوپی ہردیہ سرسی پھٹمتی آنند سُس
اپروکھی کرتھ چانس سروپس سُوی ۔ چون سروپ انرواچی نام رُوپ رُوس

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

त्वमर्क त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्व हुतवह-
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च ।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणतां बिभ्रतु गिरं
न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि ॥ ३० ॥

त्वमऽर्कः	आप सूरय हैं	परिच्छिन्नां	परिमितां
त्वम सोम	आप चन्द्रमा हैं	एवं त्वयि	तुज पर ऐसे
त्वमऽसि	आप हैं	परिणतां	परिनाम वाली
पवन	हवा	बिभृतु	शोभा वाली
त्वं हुतवह	आप अग्नी हैं	गिरं	वानी को
त्वं आप	आप जल हैं	न विद्मः	न जानते हे
त्वं व्योम	आप आकाश हैं	तत्तत्त्वं	वुह वसतु
त्वं धरणि	आप पृथवी हैं	वयं	हम भक्त
आत्मात्वं	यजमाण आप हैं	इहतु	इस संसार में
इति च	इसी तरह	यत्वं न भवसि	जो तु नही है

चुय छुख सिर्यि चन्द्रम वायू अग्न, जल आकाश पृथ्वी त यजमन
योद इमन आठन प्यठ थकइ सोस साञ वाणी, छुनह कांह वस्तु चेय रोस गस
आसन। संसारस मंज छुनह कांह त्युथ चीज, यथ मंज चोन स्वरूप छुनह भासन॥

چھُکھ سِریہ چندرم وایو اگن جل آکاش پرتھوی تہ یجمن
یود یمن آٹھن پیٹھ تھکی سوس سانی وانی چھُونہ کانہہ وستو یوس نہ لیس آسن
سمسارس منز چھُونہ کانہہ تیُتھ چیز یتھ منز چون سروپ چھُونہ باسن

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा-
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्णविकृति ।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरनुरुन्धानमणुभिः
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम् ३१

त्रयीं	वेद	तुरीयं	तुरयात्मक
तिस्रो वृती	स्त्व रज तम	ते धाम	आप का स्वरूप
त्रिभवनं	भू भवः स्वः	ध्वनिभिः	शब्दों से
अथो त्रिन	और ३ भी	अनुरन्धानं	पीछे चलने वाले
अपि सुरान	३ स्वर [अनदात]	अनुभि	लच्चनों
अकाराद्यैः	अ मात्रा से ण तक	समस्त	अखन्ड
वर्णैस्त्रिभिः	अ उ म	व्यस्तं त्वां	परिछिन हुये आप को
अभिदधत	कहा हुवा	शरणद	भक्ति पालन
तीर्ण	अतीत हुये	गृणात्य	कहता है
विकृति	विकारों से	ओं इति पदम	ओं यह पद

इमन त्रन अच्चरन हुन्द छिय वनान, अकार शब्द रिग्वेद भूर्लोक
तोगुण, उद्धात स्वर पतह विकारह सूतिय, युजर्वेद भुवःलोक व्यइ रजोगुण
नुदात तैजस पतह मकारह सूतिय, अथर्वेद स्वःलोक व्यइ तमोगुण, स्वरित
ाज्ञ इथय पाठ्य त्रेन अच्चरण हुन्द, उपाधिक नाम रूप आत्मक सूक्ष्म शब्दन
ाह पकवुन्यन त्रिविध विकारण गाछ्थ ह्योग, चोन तुया स्वरूप तथि छिय वनन
ाकार ई पद ईश्वर रूप सारिसूय, जीवह रूपह किज व्योन व्योन छिय वनन ॥

اُدم یمن ترن اکھرن ہُند چھیی ونان اکارہ شبد رِکھ وید بُو لوک ستوگن
اوداتت سُر ..... پتہ وکارہ سیتی یجر وید بوہ لوک بیہ رجوگن
انوداتت تیجس پتہ مکارہ سیتی اتھر وید سوہ لوک بیہ تموگن
سُورت پراگنیہ یتھے پاٹھی ترن اکھرن ہند اوپادھک نام روپ آتمک شکھمہ شبدن
پتہ پکونین تری ودھ وکارن گچھتھ ہیر چون توریا سروپ تتھ چھیی ونن
اومکار یی پد ایشور روپ سارسی جیو روپہ کِن بیون بیون چھیی ونن

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहा-
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम् ।
अमुष्मिन्प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रणिहितनमस्योऽस्मि भवते ।३२

भवः	भवदेव	अमुष्मिन	इस नामाष्टक में
शर्व	शर्व	प्रत्येकं	हर एक महिमा को
रुद्रः	रुद्र	प्रविचरति	अनवास्थित हो
पशुपति	देव	देव	हे चिद्घन
अथ	और	श्रुतिः अपि	वेद भी
उग्रः	देव	प्रियाय	परम प्रेमास्पद
सहमहान	नामों के साथ	अस्मै	उस स्वात्माद्वैत
तथा	उसी तरह	धाम्ने	तुरीय स्वरूप में
भीमेः	देव	प्रणिहित	अर्पन किए हुये
ईशानः	देव	नमस्यः	अहं भाव वाला
इति यत	ऐसे ही	अस्मि	हुँ
अभिधाना	आठ गिन्ती वाले	भवते	आप को
अष्टकं इदम			

भव दीव शर्व दीव रुद्र दीव पशुपति दीव, उग्र दीव महादीव भीम दीव ईशानह दीव। इमन आठन नावन हुन्द प्रथ, अक्युक महिमा, वेद छिनह महिमा तम्युक वनिथ ह्यकान। अथि परमीश्वर सञ्जि जाई तुर्या स्वरूपस, नमस्कार पनुन छुस भ अर्पन करान ॥

بو دیو شرو دیو، رُدر دیو، پشوپتی دیو اوگرہ دیو، مہادیو، بھیم دیو، ایشانہ دیو
یمن آٹھن ناون ہُند پرتھ اکیوک مہما وید چھنہ مہما تمیوک وننہ ہیکان
اتھی پرمیشرس سنزی جاے تُریہ سوروپس نمسکار پننہ چھس بہ ارپن کران

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

वपुष्प्रादुर्भावादनुमितमिदं जन्मनि पुरा
पुरारेनैवाहं क्वचिदपि भवन्तं प्रणतवान् ।
नमन्मुक्तः संप्रत्यतनुरहमग्रेऽप्यनतिमान्
महेश क्षन्तव्यं तदिदं अपराधद्वयमपि ॥ ३३ ॥

वपुः	शरीरके	नमन	प्रणाम करता हुवा
प्रादुर्भावात	प्रकट होने से	मुक्तः	मुक्त शरीर हुवा
अनुमितं	जान लिया	संप्रति	इस वक्त
इदं	यह	अतर्नुइं	शरीर रहत
जन्मनि	जन्मों में	अग्रेपि	आगे भी
पुरा	पिछले	अनितिमान	प्रणाम न करने वाला
पुरारे	हे शंकर	महेश	हे ईश्वर
नैवाहं	नहीं मेंने	क्षन्तव्यं	माफी देना
क्वचित	किसी तरह	तदिदं	वह यह
अपि	भी	अपराध	दोषों को
भवन्तं	आप के	द्वयमऽपि	जोढी को
प्रणतवान	जुका हुवा हूँ		

ही शङ्कर पनुन् शरीर प्रकट सपदनह किञ । छुस करान पानै पनुन अनुमान । पतिम्यन जन्मन मंज कुनि जन्मस मंज । ओ सुस न चेय कुन नमस्कार करान । उनिक्यन यथ जन्मस मोक्ल्योमतुय । छुस ब यमि किञ चेय कुन प्रणाम करान । बोएठ कुन शरीरह रोस इयम न करनह चाव तोता । इमन दोन अपराधन क्षमा छुसय मंगान ॥

ہی شنکر پنن شریر پرکٹ سپدنہ کِس۔ چھُس کران پانئے پنُن انُمان
پتمین زنمن منز کُنی زنمس منز اُدُس نہ چیٔ کُن نمسکار کران
اونکین یتھ زنمس منز موکلیومتُی چھُس یہ یمہ کِن چیٔ کُن پرنام کران
اونٹھ کُن شریر رُوس یمہ نہ کرنہ چاو تُوتا۔ یمن دون اپرادھن کھما چھُسے منگان

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri.

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः ।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तदिदमितिसर्वाय च नमः ॥ ३४ ॥

नमो	नमस्कार	नमः	नमस्कार
नेदिष्ठाय	नजदीक वाले को	वर्षिष्ठाय	बहुत बुडे को
प्रियदव	जन्गलों पर प्रिय	त्रिनयन	त्रिनेत्र वाले
दविष्ठाय च	बहुत दूर वाले को	यविष्ठाय	बहुतछोटे को
नमः	नमस्कार	नमः	नमस्कार
नमः	नमस्कार	नमः	नमस्कार
क्षोदिष्ठाय	बहुत सूक्ष्म को	सर्वस्मै ते	ब्रह्म को
स्मरहर	हे कामदेव नाशक	तदिदं	उस इस
महिष्ठाय च	बहुत मोठे को	अति सर्वाय च	अतीत
नमः	नमस्कार	नमः	तुर्यासुरूप को भी नमस्कार हो

स्थठाह नजिदीक रूपस चानिस नमस्कार । वनन हुंन्दिस प्रेमियस चय नमस्कार।
कामदीव गालवुनि सूक्ष्म रूपस प्रणाम । मोटिस रूपस चानिस नमस्कार ।
त्रिनेत्र दारवुनि बुड्य रूपस प्रणाम । लोकिटस रूपस चानिस नमस्कार ।
सारिसुय वातिमुतिस च प्रणाम । सारिय निशि अतीतस तुर्या रूपस नमस्कार ॥

ستھاہ نزدیک رُوپس چانس نمسکار — ژَن ہُنْدِس پریمِس [illegible] نمسکار
کامدیو گالوونی سُوکشم رُوپس پرنام — موٹس رُوپس چانس نمسکار
ترنیتر داروونی بُڈھ رُوپس پرنام — لوکٹس رُوپس چانس نمسکار
ساریسی واتمتس چہ پرنام — ساریو نشی اتیتس توریا رُوپس نمسکار

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

बहलरजसे विश्वोपत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः ।
जनसुखकृते सत्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः
प्रमहसिपदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः ॥ ३५ ॥

बहल	बहुत	जन	जीवों के
रजसे	रजोगुणवाले	सुखकृते	पालने वाले
विश्वोत्पत्तौ	जगतकी सृष्टी वाले	सत्वोद्रिक्तौ	सत्वगुणबाले
भवाय	भवरूप को	मृडाय	सुख रूप को
नमो नमः	नमस्कार हो	नमो नमः	नमस्कार
प्रबल	बुहुत	प्रमहसि	मायैश्वर्य से
तमसे	तमोगुणवाले	पदे	अतीत स्थान वाले
तत्संहारे	जगत प्रलय वाले	निस्त्रगुण्ये	गुणातीत
हराय	हर रूप को	शिवाय	शिव रूप को
नमो नमः	नमस्कार हो	नमो नमः	नमस्कार

जगतुचि सृष्टि प्यठ रजोगुण सोस्तिस, भवरूपस चानिस नमस्कार ।
जगताकिस प्रलयस प्यठ तमोगुण सोस्तिस, हरह रूपस चानिस नमस्कार ।
जगताकिस पालनस प्यठ सतोगुण सोस्तिस, सुख रूपस चानिस नमस्कार ।
गुण रोस्तिस तुर्यारूपस महेश्वरस, कल्याण रूपस चानिस नमस्कार ।

جگتچہ سرشٹی پیٹھ رجوگن سستس بوہ روپس چانس نمسکار
جگتہ کس پرلیس پیٹھ تموگن سستس ہرہ روپس چانس نمسکار
جگتکس پالنس پیٹھ ستوگن سستس سکھ روپس چانس نمسکار
گن رستس تریا روپس مہیشرس کلیان روپس چانس نمسکار

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं
क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः ।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधा-
द्वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् ॥ ३६ ॥

कृश	विनाश ही	इति	इसी विचार से
परिणति	फलवाला	चकितम	डरे हुये
चेतः	बुद्धिः (से	अमन्दी	पटुबुदी वाली
क्लेशवश्यं	विक्षेपों का स्थान	कृत्य	करके
क्वच	कहां है	मां भक्ति	मुजको भक्ती
इदं	यह	आधात	कराने लगी हे
क्वच	कहां	वरद	हे वरदेने वाले
तव	आप को	चरणयोः	चरणों पर
गुणसीम	त्रिगुण से	ते	आप के
उल्लंगिनी	अतीत	वाक्य	तुति मय
शश्वद	अविनाशी	पुष्प	फूलों से
ऋद्धिः	समपदा	उपहारम	पूजा को

ही वरदायक म्याज बुद्ध दुःखन आधीन . खराब फल दिनह वाजिन म्य बासान। कति नाशि रस्ति सम्पदाइ सोस चोन महिमा , गुणन हुंन्धव हदबनिश अतीत आसान। अमि किन खुचिमति वोज़ सोस ब आमवुन , पनुन्य भक्ति छ्यम म्य वननावान। चान्यन चरणन प्यठ इ अस्तोति शकलि , पोशि पूजा छ्यम म्य करनावान ॥

هی وردایک میان بُدھ دُکھن آدین خراب پھل دنہ واجنہ میہ باسان
کتی ناشہ رستہ سمپدایہ سُس چون مہما گُنن ہُندِ لو حدو نشہ اتیت آسان
امی کن خوچمتی وُز سُس بہ آمُتھ پَنُن بھکتی چھیم مہ وننہ ناوان
چانن چرن پیٹھ یہ استوتی شکلہ پوشہ پوجا چھیم مہ کرناوان

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी ।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ॥ ३७॥

असित	अञ्जन [सुरमा]	लिखति	लिखेगी
गिरिसमं	पहाडसा	यदि	अगर
स्यात	होगा	गृहीत्वा	पकड कर
कज्जलं	सियाहि	शारदा	सरस्वती
सिन्धुपात्रे	समन्दर दवात	सर्वकालं	हरवक्त
सुरतरु	कल्पवृक्ष	तदपि	फिर भी
वरशाखा	उत्तम टहनी	तव	आप के
लेखनी	कलम	गुणानाम	गुणों के
पत्रं	कागज	ईश	हे सर्वसमर्थ
उर्वी	पृथवी	पारं	पार को
		न याति	न पुहुंचेगी

सोरमुक पहाड आसि युद मीलि रूपी, समन्दर आसिय दवाच रूपी ।
कल्पवृक्ष शाख योद आसिय कलम रटिथ, कागज़ बदल आसि योद पृथ्वी ।
सरस्वती रोजि योद सर्व काल लेखान, चाअन गुणान हुन्दिस हदस नवातिय ॥

سُرموک پہاڑ یَد آسی مسِلی رُوپی سمندر آسی دوات رُو
کلپہ ورکھ شاخ یَد آسی قلم رٹتھ کاغذ بدل آسی یَد پرتھوی
سرسوتی روزی یَد سرو کال لکھان چانِن گُنن ہُندِس حدس نہ واتی

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौलेः
प्रथितगुणमहिम्नो ज्ञानकारुण्यमूर्तेः ।
सकलगुणवरेण्यः पुष्पदन्ताभिधानो
रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतत् चकार ॥ ३८ ॥

असुर	दैत्य	सकल	सब
सुर	देव	गुण	गुणों से
मुनीन्द्रैः	योगियों ने	वरेण्यः	अच्छा
अर्चितस्य	पूजा की हुयी	पुष्पदन्त	पुष्पदन्त
इन्दुमौलेः	शिवजी	अभिधानः	नामवाला
प्रथित	मशहूर	रुचिरः	अच्छे
गुणमहिम्नः	गुणमहिमा	अलघुवृत्तैः	लम्बे छन्दों से
ज्ञान	अनुभव	स्तोत्रं	तुति
कारुण्य	दया के	एतत	यह
मूर्ते	सुरूप वाले	चकार	करने लगा था

असुरव दीवव मुनीश्वरव पूज़्मुत सु, शिवनाथ ज्यकस चन्द्रम युस दारवुन । ाएिडमवि गुण महिमा तस निर्गुण ईश्वर सुन्द, पुष्पदन्तन उत्तम गुणव सीत स आसवुन । जान जान ज़ेठ्यव छन्दव सीत ई तोता। करने लगोव तमि इ तोत्र बनोवुन ॥

اسرو، دیوو، منیشورو پوجت سُند شوناتھ ڈلس چندرمہ یُس دارون
گنڈ متی گُن مہا تس نِرگُن ایشورس سُند پُشپ دنتن اوتم گنو سٕتۍ لیس آسون
جان جان زیٹھد چھند سٕتۍ یُتھ کرنہ لگو تمی ہے ستوتر بناون

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेत-
त्पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान्यः ।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथाऽत्र
प्रचुरतरधनायुःपुत्रवान्कीर्तिमांश्च ॥ ३९ ॥

अहरहर	हर दिन	स	वह
अनवद्यं	अच्छे	भवति	होवेगा
धूर्जटेः	शिवजी का	शिवलोके	शिवलोक में
स्तोत्रं	स्तोत्र	रुद्रतुल्य	शिव जैसा
एतत	यह	तथात्र	वैसा यहां
पठति	पढेगा	प्रचुरतर	बहुत
परम	बडे	धनायुः	धन आयुः
भक्त्या	भक्ती से	पुत्रवान	पुत्र वाला
शुद्धचित्तः	साफ दिल से	कीर्तिमान	यषवाला
पुमानयः	जो पुरुष	च	भी

युस दोहय शुद्धमन बडि भक्ति भावह किञ, शिवनाथह सुञ्ज तोता ई आसिय परान । शिव लोकस मंज शिव समान इह लूकस, आयुवान पुत्रवान धनवान यशवान बनान ॥

یُس دوہے شُدھ مَن بڈ بھکتی بھاوکِن شِوناتھ سِنز توتا یی آسی پران
شِو لوکس منز شِوَس سمان یہ لُکس، آیوُوان پُتروان دھنوان یشوان بنان

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

दीक्षा दानं तपस्तीर्थं स्नानं योगादिका क्रिया ।
महिम्नस्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥ ४० ॥

दीक्षा	गुरु का उपदेश	महिम्नस्तव	महिम्नस्तव
दानं	धान करना	पाठस्य	पाठ के
तपः	तप करना	कलां	टुकडे को भी
तीर्थ स्नान	तीर्थ स्नान	न	न
यागादिका	यज्ञ वगैरा	अर्हन्ति	समान हैं
क्रया	अच्छे काम	शोडशीम	सोलवें

ज्ञ दान धर्म तप होम तीर्थन हुन्द स्नान, इम्यत्र काम्यव सूति फल यूत
नान । "महिम्नस्तोत्रुक" पाठ करनह सूतिथ, तिमत्र खोतह शुराह
ुण फल प्राप्त सपदान ॥

یگن دان دہرم تپ ہوم تیرتھن ہندِ سنان بیو کامیہ سیت کیس پیش بنان
مہمنا ستوترک پاٹھ کرتھ ستی تمہ خوتہ شُراہ گُن پھل پراپت سپدان

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः।
अघोरान्नापरो मन्त्रा नास्ति तत्त्वं गुरो परम् ॥ ४१॥

महेशाना	शिवजी से श्रेष्ट	अघोरात	अघोर से श्रेष्ट
न	नहीं	न	न
अपरः	दूसरा	अपरः	दूसरा
देवः	देव हू	मन्त्रः	मन्त्र है
महिम्नः	महिम्नः पारसे	न	नहीं
न	न	अस्ति	है
अपरः	दूसरा	तत्त्वं	लाभकारक
स्तुतिः	स्तुता है	गुरोः	गुरु से
		ऽपरम	दूसरा

महादीवह सुन्दि खोतह थोद न ब्यई कांह दीव, "महिम्नस्तोत्र" खोतह थूज़ न कांह तोता। अघोर मन्त्र खोतह थोद ब्यई न कांह मन्त्र, गोरह [गुरु] सुन्दि खोतह थोद ब्यई न कांह स्वरूप॥

مہادیوہ سندی خوتہ تھد نہ بیہ کانہہ دیو . مہمنا ستوترٔ کھوتہ تھزر نہ کانہہ توتا
اگھور منترٔ کھوتہ تھد بیہ نہ کانہہ منتر گورہ سندی کھوتہ تھد بیہ نہ کانہہ سورُوپ

CC-0 Kashmir Research Institute, Digitzed by eGangotri

कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः
शिशुधरवरमौलेर्देवदेवस्य दासः ।
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषा-
त्स्तवनमिदमकार्षीद्दिव्यदिव्यं महिम्नः ॥ ४२॥

कुसुमदशननाम	पुष्पदन्त था	स	वह
सर्व	सब	खलु	निश्चय करके
गन्धर्व	गन्धर्वों का	निज	अपने
राजः	राजा	महिम्नो	महिम्न से
शशिधर	चन्द्र धारणवाल	भ्रष्टत्र	गिरा था
वरमौले	मौतपर	रोषात	क्रोध से
देवदवेस्य	[शिवजी]	तवनम इद	यह तव
	देवों का देव	अकार्षिद	करने लगा
दासः	दास था	दिव्यदिव्यं	अलौकिक
		महिम्नः	महिम्नः पार

पुष्पदन्त ओस गन्धर्वन हुन्द राजह, शिव नाथह सुन्द ओम दास आसवुन । तस्सुन्दि क्रोधह किञ ओस ओहदह निश गिर्योमुत, तमि किञ महिम्नस्तोत्र बनोवुन ॥

پوشپہ دنت اوس گندرون ہند راجہ شِونا تھہ سُند اوس داس آسون
تسندی کرودہ کِنہ اوس عوہدہ نِش گیوٗمُت تمہ کرِ مہمنا ستوتر بناوُن

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुँ
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेता ।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम् ॥ ४३ ॥

सुरवर	उतम देव	व्रजति	जाता है
मुनि	मनीश्वर को	शिवसमीपं	शिवके नजदीक
पूज्यं	पोजनी है	किन्नरैः	किनर
स्वर्गमोक्षैक	सुर्ग मोक्ष का	तूयमान	तुता करेगे
हेतुं	हेतु है	तवनमिदं	यह तव
पठति	पढेगा	अमोघं	शुदे
यदि	जब	पुष्पदन्त	पुष्पदन्त
मनुष्यः	मनुष	प्रणीतं	कही हुई
प्राञ्जलि	हाथ जोड कर		
नान्यचेता	एकाग्र चितसे		

उत्तम दीवन मुनीश्वरन युस पूजनी शिव, स्वर्गुक त मूक्षुक हीतो आसवुन । पुष्पदन्तन वनिमुच ई तोता न डलवुनि, मनह सोस गुलि गण्डिथ आसियपुस परान । गछि सुय शिवनाथस नजदीक किन्नर, तस्सुन्जूय आसनय तिम तोता करान ॥

اُتم دیوان مُنیشرن یُس پوجنی شِو سُورگُک تہٕ موکھوک ہیتھ آسُون
پوشپہ دنتن وینچ ہی توتا نہ ڈلوُنی منہٕ سُس گل گنڈتھ آسی یُس پران
گچھی سُوی شِونٲتھس نزدیک کنِر تس سُنزی آسن تی توتا تم کران

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

श्रीपुष्पदन्तमुखपङ्कजनिर्गतेन
स्तोत्रेण किल्विषहरेण हरप्रियेण ।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः ॥ ४४ ॥

श्री	शोभावाला	कण्ठस्थितेन	याद की हुयी
पुष्पदन्त	पुष्पदन्त	पठितेन	पढी हुयी
मुखपङ्कज	मुखकमल मे	समाहितेन	ध्यान की हुयी
निर्गते न	निकली हुयी	सुप्रीनतो	प्रसन्न
स्तोत्रेन	यह तोत्र	भवति	बनता है
किलिषु	पाप	भूतपति	जीवों का स्वामी
हरेण	दूर करने वाला	महेशः	ईश्वर
हर	शिव को		
प्रियेण	खुश आने वाली		

श्री पुष्प दन्तह सुन्दि पंपोशि मोखह निशि , द्रामुच ई तोता पापन गालान ।
शिव नाथस खोश करवुज ई तोता , युस याद करि परि ध्यान आसि दारान ।
तमिस प्यठ सपदान प्रसन्न पानह शिवनाथ , जीवन हुन्द स्वामी युस आमान॥

شری پشپ دنتہ سندی پمپوشہ مکھہ نشہ دراموچ یہی توتا پاپن گالان
شیو ناتھس خوش کروچ یہی توتا یُس یاد کری پری دھیان آسی دار
تمس پٹھ سپدان پرسن پانہ شیوناتھ جیون ہند سوامی یُس چھو آسان

۴۴

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छंकरपादयोः ।
अर्पिता तेन मे देवः प्रीयतां च सदाशिवः ॥ ४५ ॥

इत्येषा	यह	अर्पिता	अर्पन की
वाङ्मयी	वानी रूपी	तेन	जिस से
पूजा	पूजा	मे	मुझे
श्री	शूभायमान	देवः	देव
च्छङ्कर	शङ्कर	प्रीयतां च	प्रसन्न बने
पादयो	दो पादों	सदाशिवः	इश्वर (शीव)

वाणी रूप ई पूजा शूभाइमानस, शङ्करस पादन प्यठ ब अर्पण करान । तमि किन सदाशिव बनितन म्य प्यठ प्रसन्न, यूतुय योत छुस म तस शिवस मङ्गान ॥

وانی رُوپ پُوجا شوبھایمانس شنکرس پاون پیٹھ بہ اَرپن کران
تمی کِن سداشِو مہ پیٹھ بنتن پرسن یوتی یوت خوش بہ تس شیوس منگان

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

पुस्तकें जो छप चुकी हैं और श्री भवानी मण्डली में मिल सकती हैं—

१.	पञ्चस्तवे कश्मीरी भाषा में अर्थ सहित		मूल्य	।=
२.	दुर्गासप्तशति अध्याय ४ कश्मीरी भाषा में अर्थ सहित			
३.	भजगोविन्दम्	,,	,,	—
४.	[अति[illegible]] शिवचामर स्तोत्र		,,	—
५.	व्याप्तचराचर	,,	,,	—
६.	जयनारायण तथा विष्णुचामर		,,	—
७.	गौरीस्तुति	,,	,,	—
८.	सङ्कटस्तोत्र (उत्पलस्तोत्र में से)		,,	—
९.	भजन माला पहला भाग दूसरा भाग		,,	।
१०.	महिम्नःस्तोत्र	,,	,,	१

Pioneer Press, 3rd Bridge, Srinagar

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

आरती

ॐ शंकरः भव भय हरः भोजतम च म्यानि जारी ।
दुःख त संकट ही त्रिपुर हरः दूर करतम म्य सारी ॥ १
छुख च अजर छुख च अमर-छुख च सच्चिदानन्द गण
सारिस्यय त्रिभवनस च पूरित-व्यापक च त्रिन भवनन ।
त्रि नेत्र धारवूनि शंकरः-चूय छुख त्रिशूल धारी
दुःख त संकट ही त्रिपुरहरः दूर करतम म्य सारी ॥ २
त्रिन भवनन हुन्द च स्वामी-ब्रह्मादिक चि आदीन
चोनूय कराण स्मृन तीम-रातस दुहस चिय लीन ।
च्यानि सेवाय मंज रोजान-तीम कलः धारि धारी
दुःख त संकट० ॥ ३ ॥
च्यानि आज्ञाय कीन छु सपदान-सारि जगतुक विवहार
जगतकि पैदः करनुक पालनुक-मांट ह्यतोमुत चि भार ।
च्यानि मायायि कीन छि ब्रह्माण्ड फलिमुत चोपारी
दुःख त संकट० ॥ ४ ॥
भक्ती ध्यान युस छु प्रावान रथि जन्मा सु खारान
तसन्दि मापत हून्ज भनिथूय तस च भवसरः तारान ।
छुख करान दोर संसारः भय तस च कासान खारी
दुःख त संकट० ॥ ५ ॥
यस चोनूय महिमा गिव्य लोल सान रात्रो दिन
तस छुख सूति सूति रोजान छुयन तसानिश किन्ह चि भिन्न
तसन्दि मापत च ही शंकरः छुख भनान हितकारी
दुःख त संकट० ॥ ६ ॥
पुष्पदन्त आस दास चोनूय सेवाय मंज चि रोजान
च्यानि शाप मनषु लोकस मञ्ज पिव पथर तस पनुन पान ।
गुण लीला गिव तमि च्यानि रातदिन करून जारी
दुःख त संकट० ॥ ७ ॥
नाव थुवुन अथ गुण लीलायि-च्यानि महिम्नःपार
गुण गिव्य गिव्य रातस दुहुस शंकरः चि ओननय आर ।
मृति लोक ह्युर खोरथन कास्थस शापच भेमारी
दुःख त संकट० ॥ ८ ॥
यिम गिवान गुण च्यानि शंकरः यिम परान महिम्नःपार
कासान छुख भय तीमनूय छुख दिवान भवसरः तार ।
भक्तिन छुख छनान चूय ह्युरो भवसरः खारि खारी
दुःख त संकट० ॥ ९ ॥

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

भजन

आशायि च्यानि आस छुख च भवभय हरः
शंकरः ईतनै चि आरम्योनुय ।
चूय वन्तू कुस छुम यमि कटिनि भवसरः
चिय रुस्त यस चालि भार म्योनुय ॥ १ ॥
छान्ढान छान्ढान गूय म्य जन्मादिक
चिय पतः पतः करसना च भुथि म्य पिख ।
रठहत भ नालमति अनहत चूय भ अरः
शंकरः ईतनै चि आर म्योनूय ॥ २ ॥
वुछथूय थप दिमय दामनस रटये चि खोर
पकनः किन्ह दिमहय न कुनीचि ओरयोर ।
वन्हैः शंकरः दोरिरः चोन किथ भ जरः
शंकरः ईतनै० ॥ ३ ॥
यचकाल्ल वातुम हृदयस म्य अरमान
कर हावक म्य आरतीस पनुन पान ।
मुख वुछन बापत अछि लजमच म्य दरः
शंकरः ईतनै० ॥ ४ ॥
क्या गछिय कम चि शंकरः च यद बोजख
अकिस्यूय चनस सन्मुख म्यं रोजख ।
त्यलि भोज चलनम जन्मन हन्दि अरःसरः
शंकरः ईतनै० ॥ ५ ॥
भेकसन खभर हिन्य युद छु चोन व्यवहार
दुःखियन दुःख दोर करुणा चोन कार ।
त्यली कुनः इवान शंकर- छुख च म्योन घरः
शंकरः ॥ ६ ॥
मंज वति शंकरः भेकस भ प्योमुत
च्यानि यिनः भापत भ तारी गोमुत ।
यिव जल मुख म्य हाव नतः चि रुस्त गोमुत भ भरः
शंकरः ईतनै० ॥ ७ ॥

...ढ छुस त दुखवुय सूतिन बरिथ छुस, बुजरकि दूषि किज व खोफजदह छुस
...ामर्थ रोस छुस भ निर्बल त केवल, आसरस चानिस थफ करिथ छुस ।
...ी शम्भो वनाव म्य जल त्युथ युथ प्रावे, सारिवुय खोतह परम उत्तम बोर
...ाविथ छुनह व दुःख मार्ग सारी, रोजहा ... समाधि लोर ॥

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

"हरेर्नामैव केवलम्"

"बीजं धर्मद्रुमस्य प्रभवतु जगतां भूतये रामनाम"

श्रीहरि-संकीर्तनकी धुन

गोविन्द गोविन्द हरे मुरारे, गोविन्द गोविन्द रथाङ्गपाणे ।
गोविन्द गोविन्द मुकुन्द कृष्ण, गोविन्द दामोदर माधवेति ॥ १ ॥
श्रीकृष्ण राधावर गोकुलेश, गोपाल गोवर्धन नाथ विष्णो ।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव, गोविन्द दामोदर माधवेति ॥ २ ॥
श्रीकृष्ण विष्णो मधुकैटभारे, भक्तानुकम्पिन् भगवन् मुरारे ।
त्रायस्व मां केशव लोकनाथ, गोविन्द दामोदर माधवेति ॥ ३ ॥
अच्युतं केशवं राम नारायणं, कृष्ण दामोदरं वासुदेवं हरिम् ।
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं, जानकीनायकं रामचन्द्रं भजे ॥ ४ ॥

हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैव केवलम् ।
कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा ॥ ५ ॥
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥ ६ ॥
श्रीमन्नारायण नारायण जय गोविन्द हरे ।
श्रीमन्नारायण नारायण जय गोपाल हरे ॥ ७ ॥

रघुपति राघव राजा राम । पतित-पावन सीताराम ॥ ८ ॥
जय रघुनन्दन जय सियाराम । जानकि-वल्लभ सीताराम ॥ ९ ॥
जय यदुनन्दन जय घनश्याम । रुक्मिणि-वल्लभ राधेश्याम ॥ १० ॥
जय मधुसूदन जय गोपाल । जय मुरलीधर जय नन्दलाल ॥ ११ ॥
जय रघुनन्दन जय घनश्याम । जय सीतापति राधेश्याम ॥ १२ ॥
जय दामोदर कृष्ण मुरार । देवकि-नन्दन सर्वाधार ॥ १३ ॥
जय गोविन्दं जय गोपाल । केशव माधव दीनदयाल ॥ १४ ॥
श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेव ॥ १५ ॥
श्रीराम नारायण हे मुकुन्द, लक्ष्मीपते केशव वासुदेव ॥ १६ ॥
राधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम जय राधेश्याम ॥ १७ ॥
सीताराम सीताराम सीताराम जय सीताराम ॥ १८ ॥

जय राम जय राम जय जय राम ॥ १९ ॥
गोविन्द जय जय गोपाल जय जय ।
राधे रमण हरि गोविन्द जय जय ॥ २० ॥

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

राम राघव राम राघव राम राघव पाहि माम् ।
कृष्ण केशव कृष्ण केशव कृष्ण केशव रक्ष माम् ॥२१॥
जय जय राधे कृष्ण राधे कृष्ण राधे गोविन्द ।
श्रीश्यामसुन्दर मदनमोहन वृन्दावन व्रजचन्द ॥२२॥
हरे राम श्री राम श्री राम रे । जपा कर यही नाम रे बावरे ॥२३॥
हरिनाम सबका सार है गोविन्द भज गोविन्द भज ।
हरिनामसे उद्धार है गोविन्द भज गोविन्द भज ॥२४॥
राधामोहन कुञ्जविहारी, मुरलीधर गोवर्धनधारी ॥२५॥
गोविन्दो नहिं गायो तो फिर क्या कमायो बावरा ॥२६॥
राधे राधे गोविन्दो बोल भाई राधे राधे गोविन्दो बोल ॥२७॥
राधे राधे गोविन्दो जय बोलो राधे राधे गोविन्दो जय ॥२८॥
राम राम, राम राम, राम राम, राम ॥२९॥
जय हरि गोविन्द, राधे गोविन्द ॥३०॥
गोपाल कृष्ण, राधे कृष्ण ॥३१॥
हरि हरि हरि हरि हरि गोविन्द, राधे राधे हरि गोविन्द ॥३२॥
श्रीमन्नारायण नारायण नारायण (भज मन) ॥३३॥
राजा राम राम राम, सीता राम राम राम ॥३४॥
शिव हर शङ्कर गौरीशं, वन्दे गङ्गाधरमीशम् ॥३५॥
गौरीपति जय हर हर हर, चन्द्रमौलि जय हर हर हर ॥३६॥
जय गिरिजापति, जय महादेव, जय जय शंभो जय महादेव ॥३७॥
नन्द के दुलारे कान्ह हे मुरारि हो, कौशिलाके लाल राम रावणारि हो ॥३८॥
जय राम कृष्ण हरी, मुकुन्द मुरारि, मुकुन्द मुरारि, गोवर्धनधारी ॥३९॥
राम राम रटु राम राम रटु राम राम जपु जीहा ।
राम नाम नव नेह मेह को मन हठि होहि पपीहा ॥४०॥
जय मीराके गिरधर नागर जय तुलसीके राम ।
जय नरसीके साँवरिया जय सूरदासके श्याम ॥४१॥
परम मधुर युगल नाम, राधे कृष्ण सीताराम ॥४२॥
श्री राम राम राम राम राम राम जपत ।
मंगल मुद उदित होत कलिमल छल छपत ॥४३॥
राम राम राम जपु सदा सानुराग रे ।
कलि न बिराग जोग जाग तप त्याग रे ॥४४॥
हरि हरये नमः कृष्ण यादवाय नमः । गोपाल गोविन्द राम श्रीमधुसूदन ॥४५॥

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

अभिनन्दन पत्र

★

स्वस्त्यस्तु ते कुशलमस्तु चिरायुरस्तु ।
गो हस्ति वाजि धन धान्य समृद्धिरस्तु ।।
ऐश्वर्यमस्तु विजयोस्तु रिपोक्षयोस्तु ।
सौभाग्यमस्तु सततं देवो भक्तिरऽस्तु ।। ।।

★

आप स्वस्थ रहें आप का कुशल हो
आपको बडी आयु हो ऐश्वर्य हो
जय हो, शत्रुओं का क्षय हो आप के
सौभाग्य हो और सदा देवी भक्ति होवे ।।

स्वस्थ आस कुशल सुस आस वुड आय आसिनय ।
गुरि हसि अन्न धन सम्पदा आसिनय ।।
ऐश्वर्य त जय सुस आसु शत्रु क्षय आसिनय ।
सौभाग्य त भिय सदा देवी भक्ति आसिनय ।।

सेवकः— कवि जियालाल सराफ

श्री भवानी मण्डली
पुरवरीमल हारी पर्वत
श्रीनगर कश्मीर

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri